Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.5442, Volume 08, No. 02, April, 2018, pp. 481-483

विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक वातावरण का प्रभाव

डॉ. ममता शर्मा*

सार

वर्तमान युग में विकास को गति प्रदान करने की प्रकृति का जितना हाथ है, उनसे कहीं अधिक मनुष्य का योगदान है। मानव अपनी संस्कृति व सभ्यता के विकास में निरन्तर तत्पर है। किसी भी देश का विकास उस देश की शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता है और शिक्षा व्यवस्था वहां की शिक्षक शिक्षा से प्रभावित होती है। मनुष्य का सम्पूर्ण विकास शिक्षा पर निर्भर करता है। राजस्थान शिक्षक शिक्षा पूरी तरह निजी हाथों में है। 2013 तक राजस्थान में केवल दो शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएं ही राजकीय थी, लेकिन अब पांच राजकीय महाविद्यालयों में और शिक्षक शिक्षा का अध्ययन प्रारम्भ हुआ। इसके बावजूद राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान अब भी विद्यालयी शिक्षा से से जुड़े हुये हैं। विद्यालयों में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही क्रियाशील रहते हैं, आज बढ़ती हुई जनसंख्या और जीवन की व्यवस्था के कारण इन विद्यालयों का महत्व और भी बढ़ गया है। शिक्षक शैक्षिक प्रक्रिया का एक घटक है, जो एक निरन्तर गतिशील माध्यम से कार्य करता है। यदि विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों को भयभीत करने लगे, उनके तनावों में वृद्धि करने लगे तो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास ही नहीं हो सकेगा, इसलिए हमें यह जानना होगा कि विद्यालय के शैक्षिक वातावरण के विभिन्न तत्व विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति को किस प्रकार प्रभावित करते हैं और उनकी अधिगम शैली पर क्या प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या

अध्ययन कार्य को उत्तम रूप देने के लिए उसकी भाषा स्पष्ट होनी आवश्यक है। साथ ही अध्ययन कार्य में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों को स्पष्ट करने का अर्थ है कि उन्हें विस्तृत रूप में ठीक प्रकार सुनिश्चित बनाया जाये।

- **जयपुर शहर (महानगर)** – जयपुर शहर का निर्माण पूर्ण रूप से भारतीय नगर निर्माण शैली पर आधारित है तथा यह नगर एक सुनियोजित रूप से बसा होने के साथ–साथ देश के सबसे बड़े प्रदेश की राजधानी भी है। यह चारों ओर से परकोटे से घिरा है।
- **अधिगम शैली** – यह शैली किसी भी क्षेत्र विशेष के छात्राध्यापकों के विभिन्न अधिगम व्यवहार के किसी प्रतिमान विशेष से है।
- **शैक्षिक वातावरण** – विद्यालय वातावरण उस संस्था या संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति की संभावनाओं को बढ़ाता है। शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच सहयोग और मित्रता की भावना से ही शैक्षिक वातावरण स्वस्थ और सुन्दर बनता है।
- **शैक्षिक निष्पत्ति** – उपलब्धि और निष्पत्ति का प्रयोग यह ज्ञात करने के लिए किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या व कितना सीखा है अथवा यह कार्य को कितने अच्छे प्रकार से निष्पादित कर सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

- जयपुर शहर के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विभिन्न विद्यालयों में शैक्षिक वातावरण का अध्ययन करना।
- जयपुर शहर के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विभिन्न विद्यालयों में शैक्षिक निष्पत्ति का अध्ययन करना।
- जयपुर शहर के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के विद्यालय के शैक्षिक वातावरण का अध्ययन करना।
- जयपुर शहर के विद्यार्थियों के विद्यालयों की शैक्षिक निष्पत्ति का अध्ययन करना।

प्राक्कल्पना

* प्राचार्या, जयपुर, राजस्थान।

अध्ययन कार्य के व्यापक क्षेत्र को न्यून करने के लिए परिकल्पना का निर्माण करना आवश्यक होता है। ताकि अध्ययन का स्वरूप स्पष्ट, सूक्ष्म व गहन हो सके। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित प्राक्कल्पना का निर्माण किया गया है –

- जयपुर शहर के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में शैक्षिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
- जयपुर शहर के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में सार्थक अंतर नहीं होगा।
- जयपुर शहर के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण एवं शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।

अध्ययन की परिसीमा

अनुसंधान के सही परिणाम प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि शोध क्षेत्र को एक निश्चित सीमा में बांधा जाये, अर्थात् समस्या का परिसीमन किया जाये।

- प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर शहर तक ही सीमित रखा गया है।
- प्रस्तुत शोधकार्य के लिए जयपुर शहर के 6 विद्यालयों का चयन किया गया है।
- यह अध्ययन हिन्दी व अंग्रेजी विद्यालय के 1000 विद्यार्थियों पर ही किया गया है।
- दो स्तरीकृत उपकरणों के द्वारा ही तथ्य संकलन किये गए हैं।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोधकार्य में जयपुर शहर के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों को लिया गया है। इसमें 100 शिक्षक और 1000 विद्यार्थियों को लिया गया है। उपयुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति विद्यालयों के कार्यालयों से ज्ञात की गई है।

अध्ययन के उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

- प्रमापीकृत उपकरण
- अप्रमापीकृत उपकरण

अध्ययन के परिणाम

शोधकर्त्री ने मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी आदि सांख्यिकी के आधार पर अपने अध्ययन के निष्कर्ष निकाले हैं।

सारणी 1: जयपुर शहर के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण के सभी आयामों के कुल अंकों का मध्यमान और प्रमाप विचलन

क्र.सं.	विद्यालय	मध्यमान	प्रमाप विचलन
1.	हिन्दी माध्यम	144.20	29.02
2.	अंग्रेजी माध्यम	132.20	28.28

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण के विभिन्न आयामों के कुल अंकों का मध्यमान 144.20 तथा प्रमाप विचलन 29.02 जबकि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण के विभिन्न आयामों के कुल अंकों का मध्यमान 132.20 तथा प्रमाप विचलन 28.24 है।

हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के अंकों के मध्यमानों को देखने से स्पष्ट है कि हिन्दी माध्यम विद्यालय के शैक्षिक वातावरण के अंकों का मध्यमान अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की अपेक्षा अधिक अच्छा है, इसलिए हिन्दी माध्यम के विद्यालयों का शैक्षिक वातावरण अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की अपेक्षा उच्च है।

सारणी 2: जयपुर शहर के अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण के प्रथम आयाम भौतिक साधन के अंकों का मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात

क्र.सं.	विद्यालय	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता का अंतर
1.	अंग्रेजी माध्यम (लड़कियां)	26.5	7.66	1.43	असार्थक
2.	अंग्रेजी माध्यम (लड़के)	23.5	13.23	–	–

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत लड़कियों व लड़कों के शैक्षिक वातावरण के प्रथम आयाम भौतिक साधन के अंकों के मध्यमानों में 3 का अंतर है। लड़कियों व लड़कों के मध्यमानों का यह अंतर सार्थक है अथवा नहीं, इसकी सार्थकता की जांच करने हेतु टी–परीक्षण किया गया। टी–परीक्षण द्वारा मध्यमानों का अंतर का मूल्य 1.43 प्राप्त हुआ, जिसका मूल्य 0.05 विश्वास स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 विश्वास स्तर के मान 2.58 से कम है, अर्थात् मध्यमानों का अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। अतः यह स्पष्ट है कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण का प्रथम आयाम भौतिक साधन की सुविधाएं दोनों में समान रूप से उपलब्ध है, अर्थात् अंतर सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी 3: जयपुर शहर के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति के अंकों का मध्यमान व प्रमाप विचलन

क्र.सं.	विद्यालय	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता का अंतर
1.	हिन्दी माध्यम	50.40	17.44	0.22	असार्थक
2.	अंग्रेजी माध्यम	49.85	17.78	–	–

उपरोक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट है कि हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के शैक्षिक निष्पत्ति के अंकों के मध्यमानों में 0.55 का अंतर है। मध्यमानों का यह अंतर सार्थक है अथवा नहीं, इसकी सार्थकता की जांच हेतु टी–परीक्षण किया गया, जिसका ही मूल्य 0.22 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 विश्वास स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 विश्वास स्तर के मान 2.58 से कम है। अतः मध्यमानों का यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है, अर्थात् असार्थक है।

सारणी 4: जयपुर शहर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति के अंकों का मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात

क्र.सं.	विद्यालय	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता का अंतर
1.	अंग्रेजी माध्यम	49.87	10.53	0.15	असार्थक
2.		49.5	14.75	–	–

उपरोक्त सारणी पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति के अंकों के मध्यमानों में 0.37 का अंतर है। दोनों वर्गों में अंतर सार्थक है अथवा नहीं, इसका पता लगाने के लिये टी–परीक्षण किया गया। टी–परीक्षण द्वारा मध्यमानों में अंतर का मूल्य 0.15 प्राप्त हुआ है, जो कि 0.05 विश्वास स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 विश्वास स्तर के मान 2.58 से कम है। अर्थात् मध्यमानों में अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से असार्थक है, अर्थात् सार्थक नहीं है। अतः यह स्पष्ट है कि हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का स्तर समान है, अर्थात् समरूप है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- कपिल एच.के. – ''सांख्यिकीय के मूल तत्व'', हरिप्रसाद भार्गव, कचहरी घाट, आगरा (1993)
- गुड़, बार एवं स्केट्स –''मैथेडोलॉजी ऑफ एजूकेशन रिसर्च'', एप्पलटोन सेन्चुरी कंपनी, न्यूयार्क, पृ.सं. 105
- सुखिया, एस.पी. – ''विद्यालय प्रशासन एवं संगठन'', रवि मुद्रालय, आगरा
- सचदेवा, ए.एस. – ''स्कूल प्रशासन एवं प्रबंध'', दिल्ली प्रिन्टर्स, जालन्धर।
- ढोंढियाल, एस. तथा फाटक, ए.बी. (1983) – ''शैक्षिक अनुसंधान का विधि–शास्त्र'', जयपुर, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी।
- ऐनेसटेसी, ए.ए. (1961) – ''साइकोलोजिकल टेस्टिंग'', न्यूयार्क, मैकेमिलन को., पेज 430–32
- वर्मा, रामपाल सिंह – ''विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

♦❐♦